हमारी प्यारी मीठी दीदी मनमोहिनी 28 जुलाई 1983 को अव्यक्त रूपधारी बन अव्यक्त वतनवासी बनी। ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद दीदी और दादी की जोड़ी ने यज्ञ की खूब वृद्धि की। सारे ब्राह्मण परिवार की बहुत अच्छी पालना की। दीदी जी के विशेष पालना ली हुए भाई बहिनें ईश्वरीय नियम मर्यादाओं में बहुत मजबूत हो बापदादा की सेवाओं में निमित्त बने हुए हैं। दीदी जी की स्मृतियां उनके मानस पटल पर घूमती रहती हैं। दीदी जी के निमित्त कल 29 जुलाई सतगुरूवार को अपने प्यारे मधुबन घर में विशेष भोग लगाया जायेगा। आप सब भी अपने सेवाकेन्द्रों पर विशेष कल दीदी जी के निमित्त भोग लगाकर दीदी की विशेषतायें सुनाना जी। आज दादी जानकी जी ने दीदी की जो विशेषतायें सुनाई, वह आपके पास भेज रहे हैं। यह भी क्लास में सबको सुनाना जी। अच्छा। सबको याद। ओम् शान्ति।

28-7-10

''श्रीमत के कदमों पर चलना, पढ़ाई में पंचुअल रेग्युलर रहना, दीदी ने सिखाया'' – दादी जानकी

आज दीदी का दिन है। मीठी-मीठी दीदी बहुत याद आ रही है। दीदी ने आंख दिखाके, इशारे करके मीठा बनना सिखाया। सभी बड़े भाईयों ने दीदी की पालना ली है। दीदी ने सबको मजबूत बनाया है। विशेषता सबमें हैं, दादी की विशेषता अपनी, दीदी की अपनी लेकिन सर्वगुण सम्पन्न सबको बनना है। अब नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे।

बाबा हम आपके कदमों पर चलकर आपका नाम रोशन करेंगे। बाबा के कदम पर चलना, यह दीदी ने सिखाया। श्रीमत सिरमाथे पर हो, दीदी ने बहुत ध्यान दिलाया, कभी मनमत पर चलने नहीं दिया। पढ़ाई पर अटेन्शन पूरा दिया, क्वेश्चन ऐसे निकालती जो सबको फेल कर देती। पढ़ाई में सदा पंचुअल, रेग्युलर रहना, दीदी से सीखा। बाबा के साथ बहुत प्यार, बाबा के अव्यक्त होने के बाद दीदी ऐसी दृष्टि देती थी, जो दीदी की दृष्टि से सबको बाबा की भासना आती थी। विदेशी भाई बहिनों ने भी दीदी की दृष्टि से बहुत अच्छे अच्छे अनुभव किये हैं। दीदी ने बोला कम होगा, दृष्टि से बहुत भासना दी। अनुभव कराये। शाम को एक्यूरेट योग में आती थी, ऐसे लगता आफिस से बाबा को साथ लेकर योग में आ रही है। इसमें दीदी की पंचुअल्टी देखी। पुरुषार्थ में इन्ज्वाय करना, उसका मजा लेना, दीदी के पुरुषार्थ में कभी थकावट नहीं देखी। पुरुषार्थ है ही बाबा को याद करने का और मुरली का मनन-चिंतन करने का, इसमें दीदी बहुत एक्यूरेट रही। शाम को आफिस में जाओ, ऐसा क्वेश्चन मुरली का पूछेगी, जो सारी मुरली याद आ जाए। यह पास्ट याद आता है, जो वर्तमान में बहुत मदद करता है और बातें पास्ट इज़ पास्ट कर दो, यह बातें पास्ट नहीं की जा सकती। बीती को चितओ नहीं, आगे की रखो न आश, ऐसा सहजयोगी, एक्यूरेट योगी बनना है। यह दीदी से सीखा है।

ज्ञान का मंथन करना, अच्छी अच्छी बातें दीदी से सदा की है और कोई बात आपस में कभी

नहीं की। योग क्या है, ज्ञान की गहराई क्या है, सदा यही रूहरिहान होती। यह बड़ों से सीखा है।

शुरू में सब पूछते थे आपका कोर्स कब तक रहेगा! हम कहती थी जब तक जियेंगे तब तक कोर्स रहेगा। घर छोड़ने में दीदी पहला नम्बर गई। जब बाबा अव्यक्त हुआ, दीदी दादी ने मुझे बुलाया, बोली अभी तुम्हें पूना छोड़कर यहाँ रहना पड़ेगा। बाबा ने डायरेक्शन दिया है – दादी मुरली सुनायेगी, क्लास तुम्हें कराना है। दीदी मुझे बुलाकर बताती थी यह बात और स्पष्ट करना। सेवा में सदा उमंग-उल्हास में रहना, बाबा की उम्मीदों को पूरी करना यह दीदी ने कूट कूट कर पक्का कराया। अपने लिए कहेगी घर जाना है, घर जाना है, अन्त में सारा दिन यही धुन लगा दिया। अभी हमको भी यह धुन है, अब घर जाना है लेकिन बाबा को प्रत्यक्ष करके जाना है।

दीदी सदा आंख दिखाती, दीदी की आंख देखने से मीठे बन गये, कैसे बोलना है, कैसे सबको खुश करना है, कैसे सबके साथ मिलनसार होकर चलना है। ऐसे ऊपर-ऊपर से नहीं, हड्डी सेवा करना है। वारिस बनाना दीदी से सीखो। पूरा स्वाहा करा देती। जो यज्ञ के लिए मिला वह सीधा यज्ञ में जाये, यह संस्कार दीदी ने डाल दिये, एक पापड़ भी अपने लिए नहीं रखा। जो यज्ञ के लिए करे वह यज्ञ में सफल हो। जो करे वह गुप्त करे। दीदी की ऐसी विशेषताओं की माला है, इसलिए कभी एक पेनी एक रूपया भी व्यर्थ नहीं जाने देंगी। कोई सफल करे कोई व्यर्थ गंवाये, यह भी बोझ चढ़ता है। सफल करने वाले को एक का पदमगुणा बाबा देगा। यज्ञ में सफल करने वाले को बाबा देता है। गरीब का एक रूपया, साहूकार का एक हजार.. इसके भी हमारे पास मिसाल हैं, जिनको हड्डी सुख मिला है।

दीदी का नाम गोपी था, गोपी का पार्ट पहले दीदी ने ही बजाया। कितने बंधनों को काटकर बाबा के पास आ गई। फिर सिम्पल रहना सिखाया, लट्ठे का कपड़ा पहनाया। बाबा दीदी को भण्डारे में भेजता था देखो भोजन बनाते वा खाते कोई आपस में बात तो नहीं करते हैं। दीदी ऐसे आती थी जैसे कोई सी.आई. डी. आफीसर आये। सब सावधान हो जाते थे। हमको देखकर भी कोई सावधान, खबरदार हो जाये। ऐसी थी हमारी मीठी दीदी। अच्छा। ओम् शान्ति।